Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 2028–2031

GANDHI IS OF THE FUTURE, NOT OF THE PAST: RELEVANCE OF GANDHI'S ECONOMIC IDEAS IN MODERN INDIA

गाँधी भविष्य के हैं, अतीत के नहीं: आधुनिक भारत में गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता

Poonam Mishra [1], Shakuntala Jangid [2]

[1] Associate Professor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

ABSTRACT

English: Mahatma Gandhi was a multifaceted thinker, spiritual saint, statesman and spiritual seer. His aim was to serve the nation and humanity and he undertook various political, social, educational, religious and economic activities. His economic thought was based on moral and ethical principles, influenced by Tolstoy and Ruskin. Gandhi believed that economics which hurts the moral welfare of an individual or a nation is immoral and sinful. He was a practical idealist and opposed modern capitalism, which according to him exploits human labour. Gandhian economic ideas were based on the principle of simple living and high thinking and he believed that the progress of India depended on the development of villages. He stressed the development of rural industries like handloom, handicrafts, khadi and silk production, which were based on family labour and required less capital. He also advocated the development of cottage industries to reduce the burden on agriculture and support the village. Gandhian economic thought was also opposed to machinery, which he considered a 'great sin'. He welcomed tools and machines that saved personal labour and eased the burden of millions of cottage dwellers.

Hindi: महात्मा गांधी एक बहुआयामी विचारक, आध्यात्मिक संत, राजनीतिज्ञ और आध्यात्मिक संत थे। उनका उद्देश्य राष्ट्र और मानवता की सेवा करना था और उन्होंने विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक और आर्थिक गतिविधियाँ कीं। उनका आर्थिक चिंतन नैतिक और आचार-विचार पर आधारित था, जो टॉल्स्टॉय और रस्किन से प्रभावित था। गांधी का मानना था कि जो अर्थशास्त्र किसी व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को ठेस पहुँचाता है, वह अनैतिक और पापपूर्ण है। वे एक व्यावहारिक आदर्शवादी थे और आधुनिक पूंजीवाद का विरोध करते थे, जो उनके अनुसार मानव श्रम का शोषण करता है। गांधीवादी आर्थिक विचार सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांत पर आधारित थे और उनका मानना था कि भारत की प्रगति गाँवों के विकास पर निर्भर है। उन्होंने हथकरघा, हस्तशिल्प, खादी और रेशम उत्पादन जैसे ग्रामीण उद्योगों के विकास पर ज़ोर दिया, जो पारिवारिक श्रम पर आधारित थे और कम पूँजी की आवश्यकता रखते थे। उन्होंने कृषि पर बोझ कम करने और गाँव को सहारा देने के लिए कुटीर उद्योगों के विकास की भी वकालत की। गांधीवादी आर्थिक विचार मशीनरी का भी विरोध करते थे, जिसे वे 'महापाप' मानते थे। उन्होंने ऐसे उपकरणों और मशीनों का स्वागत किया जिनसे व्यक्तिगत श्रम की बचत हुई और लाखों कुटीरवासियों का बोझ कम हुआ।

Keywords: Economic Thought, Mahatma Gandhi, Economics, आर्थिक विचार, महात्मा गांधी, अर्थशास्त्र

Corresponding Author
Shakuntala Jangid,
shakuntla992@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6150

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

मूल शब्द: आर्थिमहात्मा गांधी एक अत्यंत जटिल विचारक, आध्यात्मिक संत, राजनीतिज्ञ और एक अद्वितीय व्यक्तित्व थे। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण उन्हें बहुत सराहा और याद किया जाता है। उनके जीवन का उद्देश्य राष्ट्र और मानवता की सेवा करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के

लिए उन्होंने कई राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक और आर्थिक गतिविधियाँ कीं। उनकी गतिविधियों के कई रूप समाज की आर्थिक भलाई से संबंधित थे। उनका स्पष्ट मानना था कि व्यक्ति और राष्ट्र के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता अपरिहार्य है। इसी के कारण उन्होंने देश की विभिन्न आर्थिक समस्याओं पर विचार और अध्ययन किया और उनके समाधान के लिए कार्य योजनाएँ बनाईं। यही उनकी आर्थिक सोच का मूल था। उनके आर्थिक विचार, उनके जीवन की अन्य सभी चीजों की तरह, नैतिक और आचार संबंधी विचारों से प्रेरित थे। गांधी टॉल्स्टॉय और रस्किन से बहुत प्रभावित थे। टॉल्स्टॉय द्वारा लिखित "ईश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है" और रस्किन की पुस्तक "अनटू दिस लास्ट" का गांधीजी पर गहरा प्रभाव पड़ा। टॉल्स्टॉय के विचारों से, उन्होंने समतावाद, तप और सादगी की अवधारणाएँ प्राप्त कीं, जो बाद में उनके आर्थिक विचारों का आधार बनीं। टॉल्स्टॉय द्वारा प्रचलित 'रोटी श्रम' के विचार ने गांधीजी को प्रभावित किया और उनके इस विश्वास को और मजबूत किया कि मशीनी तकनीक से बचना चाहिए। रस्किन की पुस्तक से उन्हें भौतिक प्रगति के प्रति अरुचि पैदा हुई। प्रिंस क्रोपोटकिन जैसे अराजकतावादियों ने आर्थिक और राजनीतिक सत्ता के केंद्रीकरण के प्रति घृणा विकसित की।

2. गांधीवादी अर्थशास्त्र

गांधीवादी आर्थिक विचार नैतिक और नैतिक आधारों पर आधारित हैं। उनके अनुसार, जो अर्थशास्त्र किसी व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को ठेस पहुँचाता है वह अनैतिक है, और इसलिए पापपूर्ण है। उनका मानना था कि वह अर्थशास्त्र असत्य है जो नैतिक मूल्यों की उपेक्षा या अवहेलना करते हैं। 'सादा जीवन और उच्च विचार' के सिद्धांत ने गांधीजी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी एक व्यावहारिक आदर्शवादी थे। उनके अर्थशास्त्र को अहिंसा का अर्थशास्त्र कहा जाना चाहिए। उन्होंने आधुनिक पूंजीवाद का विरोध किया, क्योंकि उनके अनुसार यह मानव श्रम का शोषण करता है।

गांधीवादी आर्थिक विचारों की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं को इस प्रकार समझाया जा सकता है:

ग्राम गणराज्य: गांधीजी के अनुसार भारत अपने गांवों में रहता था। राष्ट्र की प्रगति और विकास गांवों के विकास पर निर्भर करता है। इसलिए वे गांवों को आत्मनिर्भर इकाइयों के रूप में विकसित करने में रुचि रखते थे। उन्होंने गांव की प्रगति को बढ़ावा देने के लिए हथकरघा, हस्तशिल्प, खादी, रेशम उत्पादन आदि जैसे ग्रामीण उद्योगों के विकास पर जोर दिया। ग्रामीण उद्योग पारिवारिक श्रम पर आधारित होते हैं और उन्हें उत्पादन के लिए अपेक्षाकृत कम पूंजी की आवश्यकता होती है। आवश्यक कच्चा माल स्थानीय या आस-पास के क्षेत्रों में उपलब्ध होता है और उत्पादन को स्थानीय बाजारों में भी बेचा जा सकता है। इसलिए सामग्री, उत्पादन और बाज़ार की कोई समस्या नहीं है।

उन्होंने कृषि पर बोझ कम करने के लिए कुटीर उद्योग के विकास की पुरज़ोर सलाह दी। कुटीर उद्योग गाँवों के लिए एक अच्छी सहायक प्रणाली के रूप में भी काम कर सकते हैं। सभी ग्रामीणों को अपने गाँवों में ही रोज़गार मिल सकता है, जिससे ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन कम हो सकता है। इसके अलावा, गांधीजी ने देश के नागरिकों को ग्रामीण उत्पादों का उपयोग करने की भी सलाह दी।

उपयुक्त तकनीक: गांधीजी उस मशीनरी के ख़िलाफ़ थे जो श्रम को विस्थापित करती है और उसे बेकार छोड़ देती है। उन्होंने मशीनरी को एक 'महापाप' बताया। वे मशीनरी के ख़िलाफ़ थे अगर यह लोगों को बेकार रखती है और लोगों के लिए बेरोज़गारी की समस्या पैदा करती है। वे सभी विनाशकारी मशीनरी के ख़िलाफ़ थे। उन्होंने ऐसे उपकरणों और मशीनरी का स्वागत किया जो व्यक्तिगत श्रम की बचत करें और लाखों कुटीर निवासियों का बोझ हल्का करें। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वे केवल उन चीज़ों के बड़े पैमाने पर उत्पादन के ख़िलाफ़ नहीं थे जिन्हें ग्रामीण बिना किसी कठिनाई के उत्पादित कर सकते हैं। उनका मानना था कि मशीनरी विधि हानिकारक है, जबकि वही काम लाखों लोग आसानी से कर सकते हैं जो कहीं और काम नहीं करते। वे तकनीकी बेरोज़गारी के खतरे से अवगत थे, इसलिए उन्होंने भारत जैसे देश में जहाँ श्रम की अधिकता है, उत्पादन के श्रम-प्रधान तरीकों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

उद्योगवाद: गांधीजी उद्योगवाद को मानव जाति के लिए एक अभिशाप मानते थे। बड़े पैमाने पर उत्पादन लाभ-उन्मुख होता है और इसलिए, यह समाज के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि इससे धन और शक्ति कुछ सीमित हाथों में केंद्रित हो जाती है। उनका मानना था कि उद्योगवाद पूरी तरह से देश की शोषण क्षमता पर निर्भर करता है। उन्होंने विकेंद्रीकरण की वकालत की क्योंकि इससे हिंसा से बचा जा सकता है। उन्होंने विशेष क्षेत्रों में उत्पादन के केंद्रीकरण के बजाय स्थानीयकरण का सुझाव दिया।

उन्होंने बड़े पैमाने पर उद्योगवाद का विरोध सामाजिक न्याय के आधार पर भी किया। यह बहुतों की कीमत पर कुछ लोगों को समृद्ध करेगा। उनका मानना था कि इससे आर्थिक शक्ति कुछ ही हाथों में केंद्रित हो जाएगी। गांधी विशेषाधिकार और एकाधिकार से नफरत करते थे।

विकेंद्रीकरण: गांधी के जीवन का मूल सिद्धांत अहिंसा था। उनके अनुसार बड़े पैमाने पर उत्पादन हिंसा पर आधारित था, इसलिए उन्होंने अर्थव्यवस्था के विकेंद्रीकरण की वकालत की। उन्होंने छोटे पैमाने पर बड़ी संख्या में स्थानों पर उत्पादन या लोगों के घरों में उत्पादन की वकालत की। वह जनता द्वारा उत्पादन चाहते थे, बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं। बड़े पैमाने पर उत्पादन से जनता को कोई फायदा नहीं होता।

ग्राम सर्वोदय: गांधी के अनुसार असली भारत गांवों में है, कस्बों और शहरों में नहीं, इसलिए उन्होंने आत्मनिर्भर और आत्मनिर्भर गांवों की प्रगति और विकास का सुझाव दिया। वह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार चाहते थे। इस उद्देश्य के लिए खादी कार्यक्रम उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। वह खादी को गाँव के सौरमंडल का सूर्य मानते थे।

रोटी-मजदूरी: गांधी टॉल्स्टॉय की पुस्तक से बहुत प्रभावित थे। इसके अलावा, वह गीता के इस विचार से भी बहुत प्रभावित थे कि "जो दूसरों को बलि का फल दिए बिना खाता है, वह चोर है।" गांधी के लिए, श्रम ही संपूर्ण सृष्टि का मूल है। उनका मानना था कि किसी को भी पर्याप्त श्रम किए बिना अपनी रोटी नहीं खानी चाहिए। उन्होंने 'रोटी-मजदूरी' की अवधारणा का उपयोग लोगों को अपने खाली समय का उपयोग करने के लिए कहने के लिए किया, जो गाँवों में वर्ष के छह महीनों के कार्य दिवसों के बराबर होता है। उन्होंने शारीरिक श्रम के सिद्धांत का प्रचार और अभ्यास किया।

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत: ट्रस्टीशिप की अवधारणा गांधी का सबसे क्रांतिकारी आर्थिक दर्शन है। यह आवश्यकता-आधारित उत्पादन, समान वितरण और सामाजिक न्याय का सिद्धांत है। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत तीन गांधीवादी सिद्धांतों - अहिंसा, स्वराज और समानता पर आधारित है। सत्य, अहिंसा, रोटी-मजदूरी और अपरिग्रह ने गांधीजी को इस अवधारणा की ओर प्रेरित किया। प्रत्येक व्यक्ति, अपने और दूसरों के लिए ट्रस्टी बनकर, समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। गांधीजी के अनुसार, एक व्यक्ति सामाजिक शक्ति की भावना से रहित होकर एक ट्रस्टी की भूमिका निभाता है और साथ ही एक लाभार्थी की भी। गांधीजी चाहते थे कि पूंजीपति अपना व्यवसाय ईमानदारी और कुशलता से चलाकर और लोगों के कल्याण के लिए राष्ट्र के ट्रस्टी बनें। संक्षेप में, गांधीजी का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत है, "जिन लोगों के पास धन या संपत्ति है, उन्हें इसे समाज के लिए ट्रस्ट में रखना चाहिए।" इसका अर्थ है कि सारा धन और संपत्ति मूल रूप से समाज की है, लेकिन यह सभी के बीच उनकी आजीविका के उद्देश्य से वितरित की जाती है।

खाद्य समस्या: गांधीजी ने अपने जीवन का सबसे बुरा अकाल वर्ष 1943-44 के दौरान देखा था, जब देश भर में खाद्यान्न की कमी के कारण बंगाल को भारी नुकसान हुआ था। शुरुआत में उन्होंने सोचा कि यह कमी कृत्रिम रूप से पैदा की गई है। लेकिन जब उन्होंने मद्रास, असम और बंगाल का दौरा किया, तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि भोजन की कमी वास्तविक थी। उन्होंने इस समस्या के समाधान के लिए कई उपाय सुझाए।

उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को भोजन की आवश्यकताओं को न्यूनतम तक कम करना चाहिए और जहाँ तक संभव हो, दालों और खाद्यान्नों की खपत को दूध, फल और सब्जियों आदि से कम करके कम किया जाना चाहिए।

जनसंख्या: गांधी जनसंख्या नियंत्रण के तरीके के विरोधी थे। वह इस विचार से सहमत नहीं थे कि भोजन की कमी जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि के कारण होती है। उनका मानना था कि "एक उचित भूमि व्यवस्था, बेहतर कृषि और एक सहायक उद्योग के माध्यम से, देश आज की तुलना में दोगुने लोगों का भरण-पोषण करने में सक्षम है।"

निषेध: गांधी ने निषेध की वकालत की। उनका मानना था कि भारत के लिए हजारों शराबियों की तुलना में गरीब होना बेहतर है। वह शराब के सेवन को एक बुराई के बजाय एक बीमारी मानते थे। उनका मानना था कि शराब का सेवन एक बड़ी सामाजिक बुराई है। वे उन लोगों से सहमत नहीं थे जो यह मानते थे कि शराबबंदी लागू होने से सरकार के राजस्व में भारी गिरावट आएगी और इसके कारण शिक्षा और अन्य सामाजिक सेवाओं के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध नहीं होगा।

3. आधुनिक भारत में गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता

कई अर्थशास्त्री गांधी को एक मध्ययुगीन रहस्यवादी मानते हैं जिन्होंने मानव प्रगति की घड़ी को पीछे धकेलने की कोशिश की। लेकिन अधिकांश आलोचना गांधी के विचारों की घोर गलतफ़हमी पर आधारित है। उनके आर्थिक दर्शन और विचारों को समझने और सराहने के लिए समझ, दूरदर्शिता और सहानुभूति की आवश्यकता होती है।

गांधीवादी दर्शन नैतिक और आचार मूल्यों पर आधारित है। वे एक व्यावहारिक आदर्शवादी थे। उनके विचार मूलतः ठोस हैं और वर्तमान समय के लिए भी प्रासंगिक हैं। उनके विचार मध्यकालीन और पुराने नहीं हैं। उनके विचारों की आधुनिक भारत के लिए महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है। उनके निधन के बाद से जो कुछ हुआ है, उसने उसकी प्रासंगिकता को कम नहीं किया है बल्कि और बढ़ा दिया है।

अक्सर यह माना जाता है कि वे मूलतः एक धार्मिक संत थे जो आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक पद्धति के विरोधी थे। लेकिन उनके बारे में यह एक गलत धारणा है। वे मशीनरी के बिल्कुल भी विरोधी नहीं थे। उनका मानना था कि भारत जैसे देश में, जहाँ पूँजी दुर्लभ और श्रम प्रचुर है, श्रम-प्रधान उद्योगों का उपयोग करना अधिक लाभदायक और अनुकूल होगा। उन्हें डर था कि बड़े पैमाने पर मशीनरी के उपयोग से तकनीकी बेरोज़गारी पैदा होगी। मशीनरी पर उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। कई दशकों से मशीनों के उपयोग और शक्ति-चालित आर्थिक विकास की योजना बनाने के बावजूद, बेरोज़गारी अभी भी मौजूद है और बढ़ रही है। गुन्नार मिर्डल ने अपने एशियाई नाटक में, गाँधी के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों पर ज़ोर का व्यापक रूप से समर्थन किया है। अल्पविकसित देशों में, मानव संसाधनों का पूर्ण रोज़गार बड़े पैमाने पर उत्पादन पर नहीं, बल्कि जनता द्वारा उत्पादन पर निर्भर करेगा। बड़े पैमाने पर उत्पादन पर आधारित आर्थिक व्यवस्था में, आम तौर पर अमीर और अमीर होते जाते हैं और गरीब और गरीब होते जाते हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में नवाचार और उद्यमिता गाँधी के अहिंसा, विकेंद्रीकरण, ग्राम स्वराज आदि पर विचार आज भी प्रासंगिक हैं। गांधी का दृढ़ विश्वास था कि हिंसा और वर्ग-युद्ध के साम्यवादी तरीके भारतीय परिस्थितियों के लिए अनुपयुक्त हैं।

औद्योगीकरण और शहरीकरण के परिणामस्वरूप वायु और जल प्रदूषण हुआ है। यह समस्या धीरे-धीरे दुनिया की नंबर एक समस्या बनती जा रही है। आदर्श ग्राम अर्थव्यवस्था पर आधारित सामाजिक व्यवस्था में, प्रदूषण कोई बड़ी समस्या नहीं होगी। उनका ट्रस्टीशिप का सिद्धांत वर्तमान परिस्थितियों में भी प्रासंगिक है। गाँधी भविष्य के हैं, अतीत के नहीं। उनका संदेश शाश्वत है। उन्होंने एक बार लिखा था, "जब तक मेरा विश्वास प्रज्वलित रहेगा, जैसा कि मुझे आशा है कि मैं अकेला खड़ा रहूँगा, मैं कब्र में जीवित रहूँगा और उससे भी बढ़कर, उससे बात करूँगा।" हम गाँधी के एक महान

प्रशंसक, लुई फिशर के शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त कर सकते हैं। "यदि मनुष्य को जीवित रहना है, यदि सभ्यता को जीवित रहना है और स्वतंत्रता, सत्य और शालीनता में फलना-फूलना है, तो बीसवीं शताब्दी का शेष भाग और उसके बाद का भाग लेनिन या ट्रॉट्स्की का नहीं, माक्र्स या माओ का नहीं, बल्कि महात्मा गांधी का होना चाहिए।"

संदर्भ

क्रॉफर्ड, एस. (2014)." स्वदेशी और भारत का आर्थिक विकास।" uvic.ca/~stucraw/ Lethbridge/ MyArticles/Swadeshi.htm.ij उपलब्ध है।

देशमुख, एस. (2011). "21वीं सदी में गणपति विचार की प्रासंगिकता"। अंतर्राष्ट्रीय संदर्भित शोध पत्रिका। खंड-प्प्प् (26)।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, खंड 4, पृष्ठ 78-79।

गुप्त शांति स्वरूप (1994) : 'महात्मा गांधी का आर्थिक दर्शन',कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, पृष्ठ 185.

गुप्त शांति स्वरूप (1994) : 'महात्मा गांधी का आर्थिक दर्शन',कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, पृष्ठ 136.

नारायण, एस. (1970). गांधीवादी अर्थशास्त्र, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे.

https://www.researchgate.net/publication/275524627.xkaèkhoknh आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता एक मूल्यांकन.

https://www.mapsofindia.com/personalities/gandhi/economic-ideas.html